लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

कवि रसखान

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

रसखान

रसखान सगुण काव्य-धारा की कृष्ण-भक्ति शाखा के कवि थे। डॉ॰ नागेन्द्र ने रसखान का जन्म 1533 ई॰ माना है। मुस्लिम कवियों में रसखान का श्रेष्ठ स्थान है। मूल गुसाईं चरित में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस की कथा सर्वप्रथम रसखान को सुनाने का उल्लेख है।

रसखान की काव्य भाषा शुद्ध परिमार्जित एवं साहित्यिक ब्रज है। रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था। ये दिल्ली के पठान सरदार कहे जाते हैं। कुछ विद्वान इन्हें पिहानी का निवासी मानते थे। किंतु इस विषय में कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इनके जन्म के संबंध में मतभेद है, कुछ विद्वान इनका जन्म 1533 ई॰ मानते हैं, तो वहीं मिश्रबंधु ने इनका जन्म 1548 ई॰ माना है।

रसखान गुसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये थे। इनका लौकिक प्रेम भगवान कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम-भाव में परिवर्तित हो गया था। वे जितना कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध थे, उतना ही लीला भूमि ब्रज के प्राकृतिक सौंदर्य पर भी।

कृष्ण के प्रति रसखान के प्रेम-भाव में अत्यंत तीव्रता, गहनता और तन्मयता है।

रसखान की कृतियाँ हैं - प्रेमवाटिका, दानलीला, सुजान रसखान।

• "सुजान रसखान" की रचना कवित्त और सवैया छन्दों में हुई है। "सुजान रसखान" मक्ति और प्रेम-विषयक मुक्तक काव्य है और इसमें 139 भावपूर्ण छंद हैं।

• "प्रेमवाटिका" में 25 दोहो में प्रेम के स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन है। "प्रेमवाटिका" में कवि में कवि ने राधा-कृष्ण को प्रेमोद्यान का मालिन - माली मानकर प्रेम के गूढ़ तत्व का निरूपण किया है।

• "दानलीला" 11 दोहों की छोटी-सी कृति है, इसमें राधा-कृष्ण संवाद है।
अन्य कृष्ण भक्त कवियों की भाँति इन्होंने परंपरागत पद-शैली का अनुसरण नहीं किया इनकी मुक्तक छन्द शैली की परंपरा रीतिकाल तक चलती रही। इनकी भाषा मधुर एवं सरस है।
"प्रेमवाटिका (1614ई)" रसखान की अंतिम काव्य कृति है, संभवतः इस रचना के कुछ वर्ष बाद 1618 ई० में इनकी मृत्यु हो गई।

संयोग और वियोग दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति रसखान के काव्य में देखने को मिलती है। दोहा, कवित्त और सवैया तीनों छन्दों पर इनका पूर्ण अधिकार था।
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जिन मुस्लिम हरिभक्तों के लिए कहा था "इन मुसलमान हरिजन पर कोटिन

हिन्दू वारिए " उनमें रसखान का नाम सर्वोपरि है। रसखान के यहाँ ब्रजभाषा का अत्यंत मनोरम प्रयोग मिलता है, जिसमें जरा भी शब्दाडंबर नहीं है। उनके काव्य में कृष्ण की रूप-माधुरी ब्रज महिमा व राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं का मनोहर वर्णन मिलता है।